भारत सरकार

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 3559

21 मार्च, 2025 को उत्तर देने के लिए

अस्पतालों में शल्य चिकित्सा स्थल पर संक्रमण दर

3559. श्री हनुमान बेनीवालः

क्या **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार देश के अस्पतालों में शल्य चिकित्सा स्थलों पर संक्रमण की दर विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है तथा इसके क्या कारण हैं;

(ख) क्या सरकार के पास मानव जीवन पर शल्य चिकित्सा संक्रमण के गंभीर प्रभाव तथा उपचार की बढ़ती लागत को ध्यान में रखते हुए देश में शल्य चिकित्सा संक्रमण को कम करने के लिए कोई ठोस कार्य-योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या सरकार का शल्य चिकित्सा संक्रमण को कम करने के लिए राज्यों को विशिष्ट निर्देश और दिशानिर्देश जारी करने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है तथा इसे कब तक पूरा किए जाने की संभावना है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क): भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने सूचित किया है कि जय प्रकाश नारायण एपेक्स ट्रॉमा सेंटर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली, टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुंबई और कस्तूरबा अस्पताल (केएमसी), मणिपाल में आईसीएमआर द्वारा वित्त पोषित एक अध्ययन के अनुसार, शल्य चिकित्सा स्थल संक्रमण (एसएसआई) की घटना 5.2 प्रतिशत थी। एसएसआई के लिए स्वतंत्र जोखिम कारकों में सर्जरी की अवधि, घाव का वर्ग, सर्जन का ग्रेड, अमेरिकन सोसाइटी ऑफ एनेस्थेसियोलॉजिस्ट (एएसए) वर्ग, जोखिम सूचकांक और निगरानी अवधि थे। हालांकि, निम्न और मध्यम आय वाले देशों (एलएमआईसी) में स्वास्थ्य सेवा से जुड़े संक्रमणों (एचएआई) के वैश्विक भार पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की 2011 की रिपोर्ट के अनुसार, एलएमआईसी में एसएसआई प्रकरणों की संयुक्त घटना प्रति 100 शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं में 11.8 है।

(ख) और (ग): राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) ने सूचित किया है कि स्वास्थ्य सुविधाओं में संक्रमण की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देश 2020 में तैयार और जारी किए गए थे, जो

विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों सहित अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवा कर्मचारियों के सभी स्तरों के लिए आईईसी सामग्री, सुविधा विशिष्ट मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) और नीतियों के विकास के लिए एक संसाधन के रूप में काम करते हैं। दिशा-निर्देश https://ncdc.mohfw.gov.in/wp-content/uploads/2024/09/NGIPC.pdf पर देखे जा सकते हैं। आईपीसी दिशा-निर्देशों के निम्नलिखित खंड विशेष रूप से शल्य चिकित्सा स्थल संक्रमण की रोकथाम के लिए प्रासंगिक हैं:

i. सर्जिकल इकाइयों में आईपीसी - दिशा-निर्देशों में यह सुझाव दिया गया है कि स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं में अस्पताल संक्रमण नियंत्रण समिति (एचआईसीसी) को एसएसआई जैसे कि हाथ/अग्रबाहु एंटीसेप्सिस, स्क्रब रखरखाव, सर्जिकल पोशाक का उपयोग और शल्य चिकित्सा स्थल के संदूषण को रोकने के लिए स्टेराइल क्षेत्र की तैयारी को नियंत्रित करने के लिए एसेप्टिक प्रोटोकॉल विकसित करना चाहिए। ऑपरेशन थियेटर (ओटी) की सफाई और कीटाणुरहित करने के सामान्य सिद्धांतों और सर्जरी के लिए ओटी तैयार करने की प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए। दस्तावेज़ में स्वच्छता और स्टेरिलिटी सुनिश्चित करने के लिए ओटी में अनुशंसित बुनियादी ढांचे और ज़ोनिंग की अवधारणा के बारे में भी जानकारी दी गई है।

ii. स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े संक्रमण (एचएआई) और उनकी निगरानी - दिशानिर्देश एसएसआई की रोकथाम के लिए प्रीऑपरेटिव, इंट्राऑपरेटिव और पोस्ट ऑपरेटिव हस्तक्षेपों की सिफारिश करते हैं और प्रक्रिया के बाद कम से कम 30 दिनों तक ऑपरेशन किए गए रोगियों की निगरानी करने की सलाह देते हैं।

इन दिशानिर्देशों को एक मानकीकृत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में ट्रांसलेट किया गया है, जिसका उपयोग सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए प्रशिक्षकों का राष्ट्रीय प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए किया गया है।

इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) के अंतर्गत राष्ट्रीय रोगी सुरक्षा सचिवालय ने सूचित किया है कि इस मुद्दे के सक्रिय समाधान के लिए अनेक पहल की गई हैं। इनमें देश भर में स्वास्थ्य पेशेवरों को प्रशिक्षित करने के लिए एक राष्ट्रीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का कार्यान्वयन और विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों को शल्य चिकित्सा स्थल संक्रमण की रोकथाम सहित विभिन्न रोगी सुरक्षा मुद्दों पर संवेदनशील बनाने के लिए नियमित वेबिनार का आयोजन शामिल है।

*****